(Figures in Metric tonnes)

Agency	Approximate Quantity of wheat affected by rains/ floods
Food Corporation of India	2090
Haryana Government and their agencies	21632
	23722

चीनी का उत्पादन

1573. **श्री मोहम्मद अफ़ज़ल उर्फ भीम अफ़ज़ल :** क्या **खाद्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) क्या यह सच है कि इस वर्ष चीनी का उत्पादन विगत कुछ वर्षों की अपेक्षा कम हुआ है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि चीनी के उत्पादन में कमी के बावजूद इसका निर्यात किया गया है; और

(ग) विदेशों को चीनी की कितनी मात्रा का तथा किस दर पर निर्यात किया गया है ?

खाद्य मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री कल्प नाथ राय) : (क) जी, हां ।

(ख) 1-10-1992 को 49.68 लाख टन के पूर्वावशिष्ट स्टॉक तथा 1992-93 चीनी मौसम के दौरान चीनी के पूर्वानुमानित उत्पादन स्तर को ध्यान में रखते हुए चीनी की सकल उपलब्धता, आंतरिक खपत की आवश्यकता को पूरा करने तथा बहुमूल्य विदेशी मुद्रा कमाने हेतु चीनी का निर्यात करने के लिए, पर्याप्त मानी गई थी ।

(ग) यू० एस० ए० तथा ई० ई० सी० को तरजीही कोटे सहित चीनी का वाणिज्यिक निर्यात नामित निर्यात एजेंसी अर्थात् भारतीय चीनी तथा सामान्य उद्योग निर्यात आयात निगम लि० (आई०एस०जी०आई०ई०आई०सी०)द्वारा किया जाता है । निर्यात एजेंसी द्वारा दी गई सूचना के अनुसार विदेशों को चीनी के निर्यात से संबंधीत जानकारी विवरण में दी गई है ।

विवरण

1992-93 मौसम (1 अक्तूबर, 1992 से 17 जुलाई, 1993 तक) के दौरान विदेशों को निर्यात की गई चीनी की मात्रा तथा उसकी दर दर्शाने वाला विवरण ।

क्र० सं०	देश का नाम	निर्यात की गई मात्रा (मी० टन)	विदेशी मुद्रा करोड़ रुपये में	औसत दर रुपये प्रति मी० टन में
1.	श्रीलंका	140710.55	114.88	8164.28
2.	चैक/स्लोवाकिया	50600.00	40.48	8000.00
3.	जॉर्डन	27336.25	23.89	8739.31
4.	मिश्र	17000.00	13.80	8117.65
5.	किनिया	16000.00	12.86	8037.50
6.	दुबई शारजहा	12000.00	10.10	8416.67
7.	फ्रांस	10000.00	20.47	20470.00
8.	बंगलादेश	8050.00	6.70	8322.98
9.	अंगोला	7451.73	8.63	11581.20
10.	तंजानिया	6000.00	4.63	7716.67
11.	सोमालिया	4100.00	3.39	8268.29
12.	सी०आई०एस०	500.00	0.40	8000.00
	कुल :	299748.53	260.23	8683.00

Foodgrains Damaged in Transportation

1574. DR. BAPU KALDATE: Will the Minister of FOOD be pleased to state:

(a) whether it is a fact that huge quantity of foodgrains has been damaged/is likely to be damaged in transportation because of inadequate storage facilities at the receiving terminals in various parts of the country;